❑कविता

कतनी बार मरूं / काजळी तीज

रघुराजसिंह हाड़ा

कवि परिचै

रघुराजसिंह हाड़ा रौ जलम 31 मार्च, 1933 में राजस्थान रै अेक छोटै-सै गांव चमलासा (खानपुर-झालावाड़) में होयौ। आपरी शिक्षा अेम.अे., बी.अेड. तांई होयी। आप नूंवी धारा रा कवि मानीजै। आपरा गीत, कविता सामाजिक अर सांस्कृतिक परंपरा रा सबळ पारखी रैया है। आपरी गिणती राजस्थान रै मंच रा कवियां में होवै। सिणगार, प्रेम, राजस्थान री प्रकृति रौ सुरंगौ चित्रण, अठै री संस्कृति, रीत-रिवाज रौ निभाव, देसहित अर उणरी रक्षा री ललकार आपरै काव्य रौ प्राण है। मिनख-मानखै रै संघर्ष अर अबखायां, हिवड़ै नैं परसण वाळी मारमिक वेदना आपरै काव्य में रचै-बसै। हाड़ाजी रौ काव्य सामाजिक सरोकार रौ काव्य है। राजस्थानी गीत-कविता री मिठास देस रै खूणै-खूणै पुगावण रौ जस आपरै नांव है। आपरी प्रमुख काव्य-कृतियां में 'अणबांच्या आखर', 'घूघरा', 'हरबोला', 'फूल केसूला फूल', 'क्यूं म्हां पढां', 'म्हारौ गांव' अर 'भूतपट्टी छै' आद सामल है। आप हिंदी में केई रचनावां लिखी है। 'गीत-गद्य' (गद्य-काव्य) अर 'रंग अर सौरभ' आपरी संपादित कृतियां है। राजस्थान रै माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अर विश्वविद्यालयां रै पाठ्यक्रम में आपरी रचनावां सामल है। आकासवाणी अर दूरदरसण सूं आपरै काव्यपाठ रौ प्रसारण लगोलग होवतौ रैवै। लारलै 45 बरसां सूं साक्षरता आंदोलण सूं आपरौ गैरौ जुड़ाव रैयौ है। आप साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रै राजस्थानी परामर्श मंडळ अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री कार्यकारिणी में ई सदस्य रैया है।

आपनैं राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर कानी सूं 'विशिष्ट साहित्यकार सम्मान', जनवादी लेखक संघ, कोटा कानी सूं 'ठाडा राही' स्मृति पुरस्कार, जिला प्रशासन, झालावाड़ सूं 'साहित्य सम्मान' मिळ चुक्या है।

पाठ परिचै

'कतनी बार मरूं' कविता आपरै कविता-संग्रै 'फूल केसूला फूल' सूं लिरीजी है। इण कविता में जग री पग-पग माथै निज स्वारथ अर छळ-कपट री नीत रौ खुलासौ करीज्यौ है। मिनख जमारै में जलम लेयनै मिनख नीं होवण री पीड़ पण इण कविता में है। कवि मिजळा मिनखां री स्वारथ-नीत अर दिखावटीपणै रौ दाखलौ देता बतावै कै हर जलम में इण नीत रै कारण दुख अर पीड़ा रै सिवाय कीं नीं मिळै। लोगां री अपणायत झूठी अर खोटी है। अपणायत रा रिस्ता-नाता निजू लाभ वास्तै थोथा है। छळ अर फरेब जग में घणौ है। मिनख री जूण केसूलै फूल दांई दिखावटी अर गुणबायरी है। कवि जग रौ मनोवैग्यानिक अर सांतरौ चित्राम इण कविता में मांड्यौ है।

कवि रघुराज सिंह हाड़ा री दूजी कविता 'काजळी तीज' वांरी काव्यकृति 'अणबांच्या आखर' सूं सामल करीजी है। सन् 1962 रै भारत-चीन जुद्ध रै प्रसंग नैं लेयनै राजस्थान रै सगळै भूखेतर में चाव सूं मानीजण वाळै तिंवार 'काजळी तीज' रै मारफत अठै री वीर नारी रै वीर भावां नैं कवि सबदां रै सांचै चोखा ढाळ्या है। निजू सुख आगै देस माथै बैरी रौ संकट घणौ मोटौ। वीर धण आपरै फौजी धणी नैं इण तीज माथै सीमा माथै मोरचौ संभाळण रौ संदेसौ अर अरदास करै। वा आपरै सायब नैं वां वीरां रै मारग चालण री बात कैवै, जका धण रौ चूड़ौ नीं लजावै। तिंवार रै ओळावै कवि री वाणी नारी रै मुख सूं देस रक्षा सारू संदेसौ देवै।

कतनी बार मरूं

कतनी बार मरूं, म्हूं कतनी बार मरूं?
उगता सूरज ज्यूं उठ, पाछी कतनी बार मरूं?

जद जनमूं जद बा ही पीड़ा,
वै का वै नरकां का कीड़ा,
ऊही ढोबौ बोझ दंना को कुण पै भार धरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

या चौफेरूं फीकी हांसी,
झूठा अपणापण की फांसी,
सैं संझ्या चमनी को बझबौ, कतनी बार मरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

दौड़ा-दौड़ मचाता सावा,
मंदरा-मंदरा तपता आवा,
काची मटकी बेच ठगोरी, कितना बार मरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

जे मांगै मीठी मनव्हारां,
नैणां मद की धारा,
बेसोरम बण-बण केसूलौ, कतनी बार मरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

काजळी तीज

भोळी बाईसा का प्यारा बीर, तीज पै मत आज्यौ।
खण लिया छै काजळी तीज, तीज पै मत आज्यौ,
सायब मत आज्यौ।

म्हनैं याद छै हंदळोटा घलग्या
गीतां का बांध बलम खुलग्या
उर उळझी सतरंग डोर
पणघटां लटका कर रिया मोर
मिटी नैए पण माता की पीड़

खींचरयौ उत्तर में कोई चीर,
हिंवाळौ खाली करवाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

धरती नैं चीर धानी ओढ्यौ
मेहो म्हारा आंगण ई धोग्यौ
म्हूं सुणरी मेघ मल्हार
हाय! पण दमना सब सणगार
चाटरयौ हरियाळी बारूद
माय को मती लजाज्यौ दूध,
स्वाग को चुड़लौ उजळाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

गजरा में याद हथकड़्यां की
बींदी में ठेस बरद्दड़्यां की
केई हंस-हंस जीके हेज
छोडग्या जनवासा की सेज
खुगाळी में फांसी की याद
हे म्हारा भगतसिंह आजाद,
शहीदां की गेल्यां जाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

आजादी का सरदार सजग
सीमां का पहरादार अडग
नभ नीड़ै परबत शिखरां पै
म्हारा कंवळ बरफ की डगरां पै
म्हनैं छोड्या सारा चैन
गैल में बैठी बछा'र नैन,
पाग को मान बचा लाज्यौ, सायब मत आज्यौ।
भोळी बाईसा का प्यारा बीर, तीज पै मत आज्यौ।
खण लिया छै काजळी तीज, तीज पै मत आज्यौ,
सायब मत आज्यौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ढोबौ=ढोणौ। बझबौ=बुझणौ, निंदीजणौ। बेसोरम=गंधहीण, सोरमविहूणौ। केसूलौ फूल=केसरिया पण गंधहीण फूल, रोहिड़ै रौ फूल। चौफेरूं=च्यारूं पासी। मनव्हारां=मनवारां। खण=प्रण, प्रतिग्या। साहब=पिव, धणी। उर=काळजौ, हिवड़ौ। चीर=वस्त्र, ओढणौ। हिंवाळौ=हेमाळौ, हिमालय। मल्हार=संगीत री अेक बिरखा-राग। सणगार=शृंगार। स्वाग=सुहाग। चुड़ला=सुहाग रौ चूड़ौ। गेल्यां=मारग, रस्तै। कंवळ=कमल, सीस कुंवर। अडग=अडिग। जाज्यौ=जावौ। सावा=ब्यांव आद रौ सावौ। आवा=माटी रा भांडा नैं पकावण सारू आंच।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कतनी बार मरूं' कविता किण कविता-संग्रै सूं लिरीजी है ?

(अ) हरबोला (ब) घूघरा

(स) म्हारौ गांव (द) फूल केसूला फूल

( )

2. 'काजळी तीज' कविता किण कविता-पोथी सूं लिरीजी है ?

(अ) अणबांच्या आखर (ब) क्यूं म्हां पढां

(स) रंग अर सौरम (द) गद्य-गीत

( )

3. 'काजळी तीज' कविता किण रस री रचना है ?

(अ) वीर (ब) वात्सल्य

(स) हास्य (द) सिणगार

( )

4. रघुराजसिंह हाड़ा रौ जलम कद होयौ ?

(अ) 21 नवंबर 1943 (ब) 25 अप्रेल 1933

(स) 31 मार्च 1933 (द) 25 दिसंबर 1943

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रघुराजसिंह हाड़ा री दो काव्य-कृतियां रा नांव बतावौ।
2. 'काजळी तीज' कविता में कुणसौ देस भारत माथै आक्रमण करै ?
3. देस री हरियाळी कुण चाट रैयौ है ?
4. कवि जगत रौ किसौ सुभाव बतायौ है ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कतनी बार मरूं' कविता री सीख कांई संदेस देवै ?
2. 'केसूला फूल' रै पाण कवि कांई कैवणौ चावै ?
3. 'काजळी तीज' कविता देस रै मोट्यारां नैं कांई संदेसौ देवै ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कतनी बार मरूं' कविता रौ मूळ भाव लिखौ।
2. रघुराजसिंह हाड़ा री काव्य-सैली री विसेसतावां दाखला देयनै बतावौ।
3. 'काजळी तीज' कविता रै मांय कवि रै मूळ भाव नैं आज रै संदर्भ में समझावौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. दौड़ा-दौड़ मचाता सावा,
   मंदरा-मंदरा तपता आवा,
   काची मटकी बेच ठगोरी, कितना बार मरूं?
   म्हूं कतनी बार मरूं?

2. गजरा में याद हथकड़्यां की
   बींदी में ठेस बरद्दड़्यां की
   केई हंस-हंस जीके हेज
   छोडग्या जनवासा की सेज
   खुगाळी में फांसी की याद
   हे म्हारा भगतसिंह आजाद,
   शहीदां की गेल्यां जाज्यौ, सायब मत आज्यौ।